

वर्ष-15, अंक-12

वि.सं. 2076, युगाब्द 5121

फरवरी 2020

मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/-

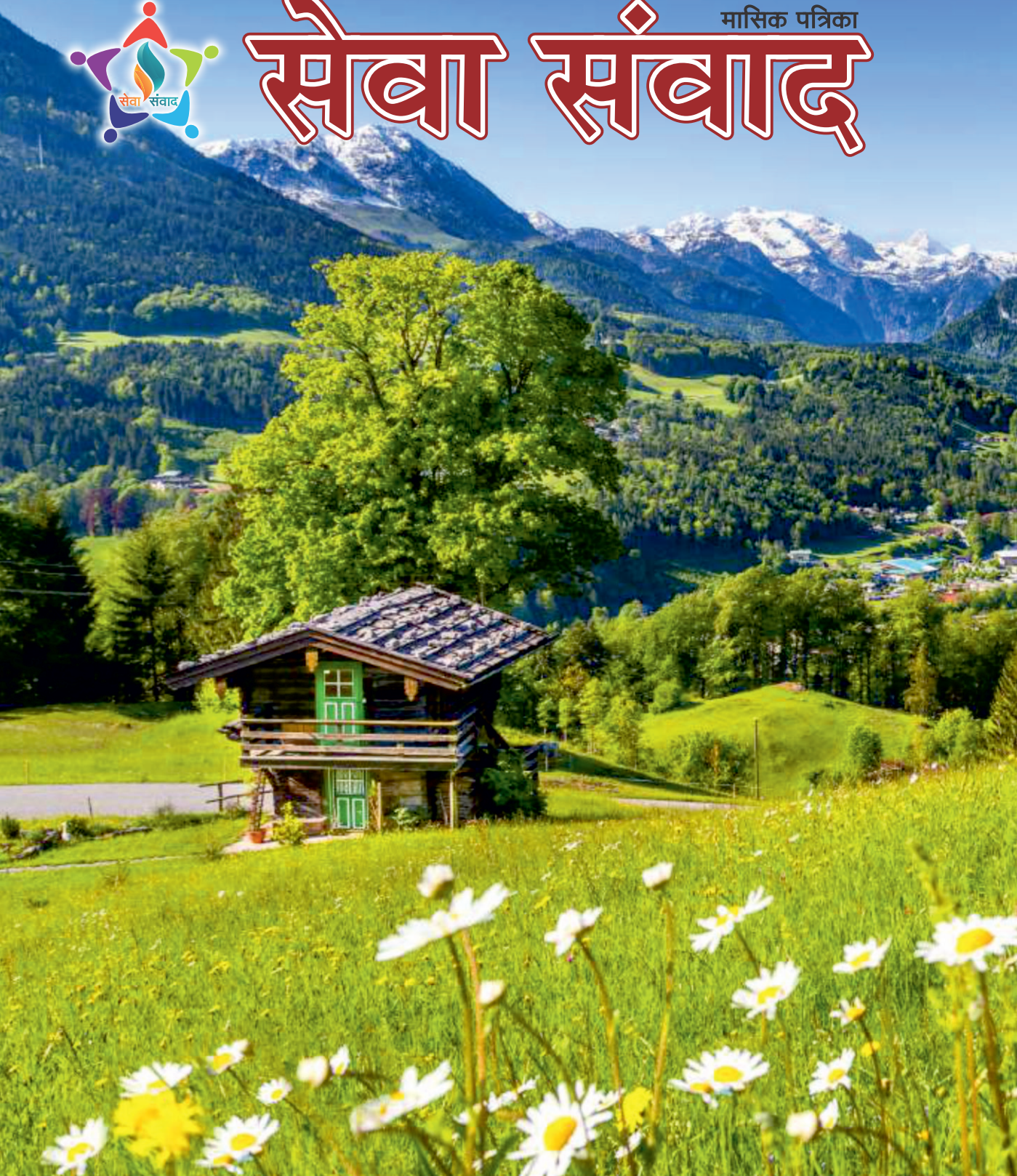
आजीवन : रु. 2000/-

वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका



सेवा संवाद



सोशल आडिट के बढ़ते कदम



समाज के सभी वर्गों को भारत सरकार/राज्य सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता, जनसहभागिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उठाये गए महत्वपूर्ण कदम।

सोशल आडिट क्यों ?

- ग्राम पंचायतों और अन्य कार्यदायी संस्थाओं के कार्यों में पारदर्शिता, जन-सहभागिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित कराने के लिए।
- लेखों की जाँच के साथ कार्यों का भौतिक सत्यापन, समाज की सहभागिता और निगरानी में।
- योजनाओं का लाभ समाज के सभी वर्गों को प्राप्त कराने के लिए।
- योजनाओं में जन-सामान्य को उनके हक, अधिकार एवं कर्तव्य के बारे में जागरूकता।

जन जागरूकता के लिये किए गए प्रयास

जन-जागरूकता रैली, सभी विकास भवनों पर होर्डिंग लगाकर, स्कूली बच्चों को जागरूकता रैली में सम्मिलित कर, स्कूटर मोटर-साइकिल रैली, लोकगीतों के माध्यम से तथा पम्पलेट्स बाँट कर एवं सोशल आडिट बैठक के पूर्व माइक द्वारा सूचना देकर आम-जन को सोशल आडिट जैसी पारदर्शी प्रक्रिया से जोड़ा गया, जिससे सोशल आडिट की बैठक में जनमानस की सहभागिता बढ़ी।

टेस्ट आडिट

सोशल आडिट की गुणवत्ता बनाये रखने के लिये निदेशालय द्वारा टेस्ट आडिट करायी जाती है।

अब तक की प्रगति

- वर्ष 2018-19 में 20,887 ग्राम पंचायतों की सोशल आडिट करायी गयी।
- वर्ष 2019-20 में माह सितम्बर, 2019 तक 16 हजार से अधिक ग्राम पंचायतों में सोशल आडिट करायी गयी।
- 31 मार्च 2020 तक प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों में सोशल आडिट कराने का लक्ष्य है।

क्या हासिल किया

सोशल आडिट के द्वारा जन सामान्य 'मेरा काम मेरा दाम' 'मेरा पैसा मेरा हिसाब' जैसे स्लोगन से अपनी आवाज उठाने में सफल हुआ। मनरेगा-प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी योजनाओं से ग्रामवासियों के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन आया तथा अपनी बात रखने का एक जनतांत्रिक मंच प्राप्त हुआ है।

जन सामान्य से अपील

सोशल आडिट एक सतत प्रक्रिया है। निदेशालय की वेबसाइट <http://socialauditup.in> पर उपलब्ध कैलेंडर के अनुसार अपनी-अपनी ग्राम पंचायतों के सोशल आडिट ग्राम सभा की बैठक में सक्रिय भागीदारी कर जवाबदेही सुनिश्चित करने में योगदान करें और सोशल आडिट को और अधिक जनोपयोगी बनायें।

राजेन्द्र प्रताप सिंह (मोती सिंह)

मंत्री, ग्राम्य विकास विभाग, उत्तर प्रदेश

सोशल आडिट निदेशालय, उत्तर प्रदेश-ग्राम्य विकास विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा जनहित में जारी।



भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-12

वि.सं. 2076, युगाब्द 5121

फरवरी 2020

मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/-

आजीवन : रु. 2000/-

वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

ओम प्रकाश गोयल
अध्यक्ष

राहुल सिंह
सचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक

डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक राजेश

मो. 09793120738

प्रबन्धक

विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक

जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।



इस अंक में

1. अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2. आत्मावलोकन	राजेश	6
3. नागरिकता संशोधन कानून	डॉ. कृष्ण गोपाल	7
4. हिंदुत्व में देश को जोड़ने की ताकत	संकलन	9
5. स्वयं विकास का आदर्श ढगेवाड़ी	संस्था परिचय	10
6. सुश्रुत की "शल्य" चिकित्सा	स्वास्थ्य जगत	13
7. एक अहर्निश सेवायात्री – दामोदर गणेश बापट	समर्पित जीवन	16
8. समर्पित जीवन	संकलन	19
9. बसन्तपंचमी	संकलन	23
10. प्रकृति ही बचाएगी प्राण	स्वास्थ्य चर्चा	24
11. सर्दी में स्नान जरूरी	स्वास्थ्य	25
12. मानसिक शांति और अध्यात्म के लिए सहायक	योग	26
13. वंचित बच्चों के जीवन में ला रहे शिक्षा का प्रकाश	संकलन	27
14. जय श्री रामाय नमः	संकलन	28
15. देश सेवा का व्रत लें	डॉ. केवलकृष्ण पाठक	29
16. मणिमाला	संकलन	30

“अगर एक हारा हुआ इंसान हारने के बाद भी मुस्करा दे तो जीतने वाला भी जीत की खुशी खो देता है ये हैं मुस्कान की ताकत”

“बार बार असफल होने पर भी उत्साह ना खोना ही सफलता है।”-
विंस्टन चर्चिल



अपनी बात



“हम संसार में भागवत् संकल्प को प्रकट करने के लिए यथासंभव पूर्ण यंत्र बनाना चाहते हैं। “तो इस यंत्र को पूर्ण बनाने के लिए इसका परिष्कार करना होगा, शिक्षा और प्रशिक्षण देना होगा। इसे एक अनगढ़ पत्थर के टुकड़े की तरह नहीं छोड़ा जा सकता। जब तुम पत्थर से कुछ बनाना चाहो तो उस पर छेनी चलानी पड़ती है, जब तुम एक रूपहीन ढेले में से सुन्दर हीरा बनाना चाहो तो उसे तराशना पड़ता है। तो यहाँ भी वही बात है। जब तुम अपने शरीर और मस्तिष्क से भगवान के लिए सुन्दर यंत्र बनाना चाहते हो तो उसे परिष्कार करना होगा। उसे सूक्ष्म बनाना होगा जो कमी है उसे पूरा करना और जो है उसे पूर्ण बनाना होगा। श्री मां का यह कथन मान कर जीवन के हर क्षेत्र में वरिष्ठों द्वारा लिए गए कठोर निर्णयों का सम्मान सहर्ष करने के लिए हमें तैयार रहना होगा।

सच्चे सुख और आनन्द के लिए हमारे मार्गदर्शक सन्त महात्मा समाज का मार्गदर्शन करते हुए सर्वत्र सात्विक प्रकाश फैलाते रहे हैं उनका कहना है कि जाति-पाति का भेदभाव पारस्परिक सुख-शांति में बाधक है अस्तु सत्य का मार्ग ही सबको ग्रहण करना चाहिए चाहे वह पुस्तकों में लिखा हो या न लिखा हो, सत्य है। भगवान का रूप ही सत्य है। श्रीमद् भागवत् में सत्य के सम्बन्ध में इस प्रकार वर्णन है—

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्योनिं निहितं च सत्ये सत्यस्य सत्ये ऋतसत्यं नेत्रं सत्यात्मकं त्वां।

भगवान कृष्ण का जब जन्म हुआ तो देवकी ने उनकी स्तुति की और कहा कि तुम सत्य रूप हो सत्य तुमसे उत्पन्न होता है तुम ही सत्य स्वरूप हो। तुम्हारे ऋत और सत्य दो नेत्र हैं, तुम सत्यात्मक पुरुष हो। इस तरह सत् माने हैं सत्ता जिसकी सत्ता है वही सत्य है। सत्य ही एक ऐसी सत्ता है जो आदि में था, वर्तमान में है और भविष्य में भी रहेगा। वही ओंकार या भगवान के

नाम से जाना जाता है। सत्य को समझने जानने के बाद यह जानना आवश्यक है कि सत्य को व्यक्ति के जीवन अथवा समाज जीवन में कैसे ग्रहण किया जाय? सच पूछिये तो यही बड़ा कठिन काम है क्योंकि सत्य भी अलग-अलग तरह से अलग-अलग दृष्टि से देखने पर सत्य भिन्न होता है। एक के द्वारा देखा गया अथवा अनुभव सत्य सब समय दूसरे के सत्य से नहीं मिलता और तब कठिनाई उत्पन्न होती है। केवल यह कहना कि सत्य आचरण करो काफी नहीं होता। महाभारत के एक प्रसंग में— **अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो** से बात स्पष्ट हो जाती है। तो फिर हम क्या करें? इस सन्दर्भ में नारद जी ने कहा है कि सत्य बोलना ठीक है। **सत्यस्य वचनं श्रेयः** लेकिन **सत्यादपि हितं वदेत्**। सत्य से भी अच्छा है कि हित बोलो जो दूसरों के फायदे की बात हो वह बोलो। सत्य ऐसा होना चाहिए जो एक आदमी का ही नहीं समस्त जगत का कल्याण कर सके वही बात सत्य है। इस तरह सत्य का आचरण तो महाकठिन है क्योंकि हमारी सीमित इन्द्रियाँ हैं सीमित दृष्टि है उसके भीतर बड़ा सत्य कैसे आयेगा वह हमारी सीमित दृष्टि में बंध जायेगा सम्भवतः इसी शंका के निवारणार्थ ? जो ब्रह्माण्ड में है वह पिण्ड में है अस्तु अपनी भीतर को विस्तृत करने और प्रकाशित करने की बात सभी सन्तों ने अपने-अपने तरह से कहा है। वेद में एक ऋचा आती है **“ऊँ स्वस्ति पन्थामनु चरेम् सूर्याचन्द्रमसाविव”** अर्थात् हम सूर्य और चन्द्र की भाँति स्वस्ति कल्याणकारी पथ का अनुसरण आचरण करें। सूर्य उदय होता है लोगों को प्रकाश अपने आप मिलता है। अस्तु हम भी दूसरों को उपदेश देने के बजाय अपने भीतर और बाहर को प्रकाशित करें जिसका प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष लाभ समाज पर पड़ेगा और समाज तदनु रूप श्रेष्ठ आचरण के लिए प्रेरित होता। संसार की बहुत सारी समस्याएँ अपने आप सुलझ जाएंगी।

सत्य परमात्मा का रूप है वह अनन्त सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है निर्भयता, निबैरता तथा प्रेम उनका स्वभाव है कृपा और निरहंकारता ही उनका गुण है। आइए—**तमसो मा ज्योतिर्गमय**— के भाव से हम बसन्तोत्सव पर वीणा वादिनी सरस्वती का पूजन करें, सत्य और मधुर वाणी बोलने के शुभ संकल्पों के साथ अपने समाज के पिछड़े, दलित, उपेक्षित, अपमानित बन्धुओं से प्रीति करें उन्हें अपने ऊँचा उठाने का प्रयास करें उनकी सेवा करें कदाचित हम ऐसा कर सकें तो हमारे जीवन में सुख समृद्धि की वर्षा होगी।



नागरिकता संशोधन कानून का विरोध वास्तविकता से परे धारणा पर आधारित

भारतीय संविधान राष्ट्रीय स्तर पर सर्वमान्य आचार संहिता है। इसमें जो सीमाएं तय की गई हैं, वह लोगों के व्यवहारिक कार्यकलापों से कहीं ज्यादा अहम है। यह कायदे-कानून के मुताबिक काम करने का एक पुख्ता दस्तावेज है। वैसे तो भारतीय संविधान में सब कुछ लिखित और वर्गीकृत है। दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र में अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार का आज जिस मनमाने तरीके से इस्तेमाल हो रही है, उससे एक नए खतरे का आहट सुनाई देती है। अपनी सहमति या असहमति जताने के लिए लोग मर्यादा तोड़ निजी हमले कर रहे हैं। विरोध-प्रदर्शन निहित स्वार्थी, दलगत राजनीति या वोटबैंक साधने के लिए ज्यादा नज़र आते हैं। दूसरे शब्दों में कहूं तो अब सड़कों पर हक और अधिकारों की आवाज कम बल्कि सत्ता संघर्ष की चीख ज्यादा सुनाई देती है। एक पक्ष अपना मत या भावनाएं दूसरे पक्ष से संविधान की आत्मा के खिलाफ है।

नागरिकता संशोधन कानून सीएए के खिलाफ हाल ही में कई राज्यों में विरोध प्रदर्शन और रैलियां हुईं। सार्वजनिक संपत्तियां जलाई गईं, पत्थरबाजी – तोड़फोड़ हुई, परिवहन व संचार सेवाएं बाधित हुईं। एक बार फिर हमने देश को थमते देखा। यह देखकर अफसोस होता है कि नागरिक जिस हक से संविधानिक अधिकारों का इस्तेमाल करते हैं, उसी

तरह अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन क्यों नहीं करते? वे क्यों भूल जाते हैं कि अगर संविधान ने हमें बोलने की आजादी दी है, तो जरूरी बाध्यताएं भी लगाई हैं। हमें विरोध जताने के संवैधानिक उपाय भी सुझाए हैं। इनमें दो प्रमुख तरीके हैं। एक, अगर किसी निर्णय या कानून से नाराजगी है तो उच्चतम न्यायालय में याचिका के जरिये न्यायिक पुनरीक्षण की मांग की जा सकती है। सीएए पर याचिकाएं दायर की गईं लेकिन माहौल इतना उग्र था कि अदालत को कहना पड़ा कि पहले हिंसा रोकें तभी सुनवाई होगी। दूसरा तरीका, संसद में संशोधन प्रक्रिया का सहारा लिया जा सकता है। हालांकि, संशोधन प्रक्रिया का सहारा लिया जा सकता है। हालांकि, सम्बन्धित कानून भी लोगों द्वारा चुनी हुई संसद ने ही बनाया है, इस तथ्य का भी सम्मान करना होगा। लेकिन आज इन दोनों ही तरीकों का समुचित उपयोग नहीं हो रहा है। दुर्भाग्यवश, स्वस्थ विरोध की जगह क्रोध-प्रदर्शन और हिंसा ने ले ली है। प्रदर्शनकारी फौरन नजरों में आना चाहते हैं, मीडिया की सुर्खियों में छाना चाहते हैं। इस घमासान में एक व्यक्ति की अभिव्यक्ति की आजादी दूसरे के जीने के अधिकार को बाधित करने लगती है। यह असंवैधानिक प्रवृत्ति निंदनीय है।

(राजेश)



नागरिकता संशोधन कानून

डॉ. कृष्ण गोपाल

पिछले कुछ दिनों से देशभर में जो नागरिकता कानून में संशोधन हुआ उस को लेकर गंभीर चर्चा चल रही है। पार्लियामेंट के दोनों सदन में जो बहस हुई, वह भी हम लोगों ने सुनी होगी और उसके बाद देशभर में जो कुछ लोगों ने उपद्रव मचाया, उसके सारे देश ने, दुनिया ने देखा।

ये गंभीर विषय है ऐसा क्यों हुआ इसलिए हम लोगों ने यह निर्णय किया कि देश भर को बताएं कि नागरिकता संशोधन यह क्या था। क्यों हुआ ? आवश्यकता क्या थी ? पृष्ठभूमि क्या है ? इसलिए हमने यह निर्णय लिया है कि बड़ी मात्रा में देश भर में नागरिकों को समझाने का काम करेंगे। उसी श्रृंखला में सभाएं सारे देश भर में हो रही हैं और मैं आपके सामने प्रस्तुत हूँ।

22 दिसंबर 2019 को एक लंबी बहस और चर्चा के बाद राष्ट्रपति महोदय ने नागरिकता कानून जो भारत का है उसको मजूरी दे दी। इस संशोधित कानून के अनुसार भारत में जो तीन देश पाकिस्तान बांग्लादेश और अफगानिस्तान है। इन देशों से वहां के अल्पसंख्यक जो प्रताड़ना पाकर भारत में आए हैं यदि वे आवेदन पत्र देंगे तो उनको नागरिकता दी जाएगी। इन तीनों देशों की विशेष स्थिति है। यह देश इतिहास में भारत का हिस्सा रहे थे। सीमाओं से जुड़े हैं। इन तीनों देशों ने अपने को इस्लामिक गणराज्य घोषित किया हुआ है। इस्लामिक गणराज्य घोषित करने के कुछ अर्थ हैं। ऐसा घोषित होने के बाद वहां पर जो अल्पसंख्यक लोग रह गए। जो इस्लाम को नहीं मानते उनको बड़ी त्रासदी सहन करनी पड़ रही है। यह सारा विश्व जानता है। किस

प्रकार से उनकी संख्या कम हो रही है उनकी मौलिक स्वतंत्रता बाधित है। अत्याचार झेल रहे हैं। यह हम देखते सुनते पढ़ते हैं।

भारत का विभाजन हुआ उस समय कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी थी देश की। कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने विभाजन के तीन महीने पहले तक देश को यही संदेश दिया था देश का विभाजन नहीं होगा। पूज्य महात्मा गांधी जी ने कहा था देश के विभाजन से पहले मेरे शरीर के टुकड़े होंगे मेरे शरीर पर होगा। हिंदू आश्वस्त हो गया। जवाहरलाल जी ने कहा जो



विभाजन की बात करते हैं वह बेहूदी बात है। देश नहीं बटेगा। सरदार पटेल से लोगों ने पूछा क्या देश बटेगा? सरदार पटेल ने कहा हम देश को बांटने नहीं देंगे। हिंदुओं को आश्वासन हो गया। अब शायद देश नहीं बटेगा। लेकिन मित्रों कांग्रेस के नेताओं ने ही देश के विभाजन के

दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए। वे अपने वचन का पालन नहीं कर सके और 3 मई 1947 को घोषणा हो गई देश बटेगा। कितना समय मिला 70-77 दिन का समय मिला। करोड़ों लोगों का विस्थापन, उनकी संपत्तियां, खेत, मकान, बाजार और दुकान। एक कठिन प्रश्न समाज के सामने खड़ा था। जो सुविधा से आ सकते हैं आ गए। पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष जिन्ना ने पाकिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यक लोगों को कहा पाकिस्तान बन गया है। पाकिस्तान के अंदर के जो अल्पसंख्यक हैं उनको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है वो अपने धर्म का पालन कर सकते हैं उनके साथ कोई भेदभाव नहीं होगा। लोग फिर से आश्वस्त हो गए, जो गरीब थे वह



जानबूझकर नहीं आ सके। थोड़े दिनों बाद नेहरू लियाकत पैकट हुआ। उस समझौते अंदर फिर गारंटी दी गई कि दोनों देश अपने-अपने अल्पसंख्यक के लोगों का सम्मान करेंगे। उनके अधिकार की सुरक्षा करेंगे। उनके सामाजिक अधिकार, धार्मिक अधिकार, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार सुरक्षित रहेंगे। लोग फिर से आश्वस्त हो गए। लोगों को लगा कि भारत के प्रधानमंत्री महोदय ने जिम्मेदारी ली है हम पाकिस्तान में रहकर अपने आप को सुरक्षित अनुभव करेंगे। उसी समय बहुत लोगों ने कहा यह धोखा है यह टिकेगा नहीं। उसके थोड़े दिन बाद ही भारत सरकार के दो प्रमुख मंत्रियों ने त्यागपत्र दिया उसमें एक डॉक्टर अबेडकर थे और एक श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे। उन दोनों ने त्यागपत्र देते समय इस बात का उल्लेख किया कि नेहरू लियाकत पैकट एक धोखा है। हम देख रहे हैं कि भारत के लोग चिंतित हैं पाकिस्तान के अंदर जो अल्पसंख्यक लोग हैं वे असुरक्षित हैं, उन पर अत्याचार जारी है, उनको वहां से भगाया जा रहा है और उसके विरोध में हम इस मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देते हैं। उसमें कई कारण गिनाए गए उसमें से एक महत्वपूर्ण कारण यह है। भारत की सरकार पाकिस्तान में रह गए अल्पसंख्यकों की सुरक्षा नहीं कर पा रही नेहरू लियाकत पैकट धोखा है। देखते देखते पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों के अंदर अल्पसंख्यकों की संख्या कम होती चली गई। उन पर अत्याचार होते थे। उनकी बहन बेटियां असुरक्षित हो गईं। उनके मंदिर असुरक्षित हो गए। उनके राजनीतिज्ञ असुरक्षित हो गए। उनका व्यापार असुरक्षित हो गया। नौकरी के साधन बंद हो गए। ऐसी स्थिति में जान बचाकर अपने धर्म को किसी प्रकार सुरक्षित रख कर भी भारत में आना चाहते हैं। लहर की लहर भारत में आती थी। ये क्रम 1947 से आज तक जारी है। जैसे – जैसे वे भारत में आते गए भारत में कई अवसरों पर अनेक कानून बने। अनेक बार संशोधन हुए इस कानून में संशोधन पहली बार नहीं हुआ है 6 बार यह संशोधन हो चुका है छह बार लाखों की संख्या में लोग भारत में आए हैं 6 बार उनको नागरिकता दी गई है और प्रत्येक बार ऐसा

हुआ है कि नागरिकता देते समय यह ध्यान रखा गया है कि अल्पसंख्यकों को ही नागरिकता दी जाए।

जवाहरलाल नेहरू ने 25 जनवरी 1948 को कहा जो पाकिस्तान से आए हैं या आ रहे हैं उनके सम्मान की रक्षा करना भारत की हमेशा के लिए जिम्मेदारी है।

इंदिरा गांधी जी ने 1971, 24 मई लोकसभा में कहा मैं 15 और 16 मई को आसाम, त्रिपुरा और बंगाल का दौरा करके आई हूँ वहां रहने वाले शरणार्थियों को देखकर मेरा मन दुखी है मेरी सहानुभुति उन सभी के साथ है हम उनकी देखभाल और व्यवस्था करने की कोशिश करेंगे।

पहले भी अनेक बार ऐसे संशोधन हुए हैं उस समय दोनों सदनों ने सर्वसम्मति से अपनी सहमति दी है और इस बार भी वही प्रस्ताव पर हुआ है इसको बहुत पहले से वर्तमान सरकार है। जो इस दल के लोग लगातार कहते आ रहे थे। हमेशा की सरकारों ने इसी लाइन पर चली है। किसी भी सरकार ने यही कदम उठाया है जो इस बार उठाया गया है और कोई भी कदम नया नहीं है। लेकिन ऐसा वातावरण तैयार किया गया जैसे किसी एक विशेष वर्ग के विरोध में है, संविधान के विरोध में है, यह भेद भावपूर्ण है। जो पहले हुआ है वही है। बल्कि इसमें छह समूह सम्मिलित किए हैं। पहले केवल एक समूह रहता था। हमेशा के लिए हिंदू के लिए कानून जाता था इस बार हिंदू के साथ पांच और समूहों को जोड़ा गया है यह मांग थी।

इसलिए इस मांग को जोड़कर के नया संशोधन लाए हैं मुझे पूरा विश्वास है आप सभी जागरूक लोग समाज के अंदर दूर तक जाकर भ्रम को समाप्त करने की कोशिश करिए। यह राष्ट्रीय दायित्व है। जो हर कंधे पर है। मुझे विश्वास है आप निर्वाह करेंगे।

लेखक :

डॉ. कृष्ण गोपाल

सह सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ



हिन्दुत्व में देश को जोड़ने की ताकत

पिछले दिनों नई दिल्ली स्थित सिरी फोर्ट सभागार में प्रज्ञा प्रवाह के अखिल भारतीय संयोजन श्री जे. नंदकुमार द्वारा लिखित पुस्तक हिन्दुत्व फॉर द चेजिंग टाइम्स का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल ने किया। इस दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि देश जोड़ने की ताकत केवल हिन्दुत्व में ही है। देश में बोलने की आजादी, बिना डर सवाल खड़ा करने की आजादी है क्योंकि इस देश का मूल भाव हिन्दूत्व है। एकत्व की कमी के कारण ही सोवियत संघ, यूगोस्लाविया बिखर गए और पाकिस्तान के भी दो टुकड़े हुए। पाकिस्तान अभी और टूटेगा, तीन और देश बनेंगे, मगर 560 रियासतों को जोड़कर बना हिन्दुस्तान अभी भी एकजुट है क्योंकि इसका मूल हिन्दुत्व है।

उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में किसी को कोई

भी उपासना—पद्धति अपनाने का अधिकार है। कोई भी किसी भी एपासना पद्धति को अपना सकता है, उसे पूरी आजादी है। ऐसे में जो भी देश और देश के लोगों के हित की बात करता है, उनके बारे में अच्छा सोचता है, मान लेना चाहिए कि वह हिन्दू है। पुस्तक के लेखक श्री जे. नंदकुमार ने कहा कि आज देश में हिन्दूत्व और हिन्दू शब्द को जानबूझकर बदनाम करने का प्रयास किया जा रहा है। हिन्दुत्व का मतलब सिर्फ हिन्दू धर्म नहीं होता। पश्चिम बंगाल में सामाजिक बदलाव हो रहा है। नागरिकता संशोधन कानून और एनआरसी के नाम पर हो रही हिंसा के पीछे केरल के प्रशिक्षित बौद्धिक लोग काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ब्रेड इंडिया ब्रिगेड देश तोड़ने में जुटी हुई है। देश के भीतर ही युद्ध छेड़ने की कोशिश की जा रही है। ऐसे में सह पुस्तक कुछ समझ विकसित करने के लिए है। सह भावनाओं में बहकर नहीं लिखी, तथ्यों के आधार पर लिखी है।



शरणागतों को आश्रय देता है सीएए

बीते दिनों बिहार के पूर्णिया जिले के परोरा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर विद्या विहार आवासीय स्कूल में संपन्न हुआ। समारोप अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे प्रांत प्रचारक श्री राम कुमार। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के बारे में आज देश में भ्रम फैलाया जा रहा है। लेकिन ऐसे लोगों के बीच जाकर उनके सामने वास्तविकता रखनी होगी। उन्होंने कहा कि देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान के तत्कालीन विधि मंत्री योगेन्द्र मंडल ने कुछ ही दिनों बाद वहां के अल्पसंख्यक दलित समुदाय की स्थिति देखकर अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। वे उनकी प्रताड़ना देखकर काफी दुखी और चिंतित हो गया थे। इसके बाद वे सभी दलित भाइयों के साथ भारत लौटना चाह रहे थे तो पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री लौटना चाह रहे थे तो पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री लियाकत अली खान ने कहा था कि आप जाइये, इन्हें मत ले जाइये। ये चले जाएंगे तो पाकिस्तान में साफ—

सफाई का काम कौन करेगा? आज ऐसे ही शरणार्थियों को नागरिकता देने के लिए सीएए कानून बनाया गया है। सह भारत के किसी व्यक्ति की नागरिकता नहीं छीनता है। इसलिए हमारे देश के दलित भाइयों समेत अन्य वर्गों को यह समझना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे शिक्षाविद् श्री रमेश मिश्र ने कहा कि संघ विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक संगठन है जो सदैव निःस्वार्थ भाव से सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में अपनी भूमिका निभाता रहा है। बिहार में 2008 में आई भीषण बाढ़ में संघ के स्वयंसेवकों के निःस्वार्थ सेवाभाव को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। संघ स्वयंसेवक के अनुशासित जीवन से समाज काफी कुछ सीख सकता है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से विद्या विहार आवासीय स्कूल के सचिन श्री राजेश मिश्र, विभाग प्रचारक श्री राकेश कुमार, विभाग सह संघचालन श्री राम कुमार केशरी, विभाग कार्यवाह श्री मोहन कुमार आदि उपस्थित रहे।



स्वयं विकास का आदर्श : ढगेवाड़ी

ढगेवाड़ी महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले की अकोला तहसील का एक गांव है। सामान्य पिछले गाँवों की तरह इस गांव में जाने के लिए भी रास्ता नहीं था। गांव की करीब 371 में से केवल 148 हेक्टेयर जमीन पर खेती की जाती थी। बारिश का पानी रोकने का कोई उपाय न होने के कारण बारिश का सारा पानी बह जाता था। धान, मूंगफली, बाजरे की खेती की तो जाती थी लेकिन उपज बहुत ही कम होती थी। लोगों को साल भर का अनाज भी नहीं मिल पाता था। गाँव में काम उपलब्ध नहीं होने के कारण लोग रोजगार की तलाश में भटकते थे। किन्तु गाँव के एक युवक भास्कर पारधी की उद्यमशीलता ने आज गांव का यह चित्र ही बदल दिया है। ढगेवाड़ी का निवासी भास्कर अकोला में वनवासी कल्याण आश्रम के बहती गृह में पढ़ता था। शिक्षा ने उसे प्रगति की दृष्टि दी। पढाई पूरी करने के बाद गाँव में आकर वह सोचता था कि गाँव के विकास के लिए कुछ करना चाहिए। लेकिन क्या करें? रास्ता नहीं सूझ रहा था। उसी समय उसे पुणे के एक शिविर में जाने का अवसर मिला। वहाँ उसे कृषि और कृषि पर आधारित व्यवसायों की जानकारी मिली। उसने गाँव में टमाटर की खेती करने का प्रयोग करने की ठानी। 1991 में उसके साथ तीनों लोगों ने पहली बार गाँव में टमाटर की खेती की। उन्हें अच्छी सफलता मिली।

यह प्रयोग ढगेवाड़ी के लोगों के लिए मार्गदर्शन सिद्ध हुआ। फिर गाँव के दस लोग टमाटर की खेती करने के लिए आगे आए। सिंचाई की सुविधा के लिए बाँध बनाकर गाँव के तालाब का पानी रोका गया। अन्य उपयुक्त स्थानों पर भी

श्रमदान से चार बाँध बनाए गए। सिंचाई की व्यवस्था होने के बाद टमाटर की खेती करने वालों की संख्या बढ़ती गई। किसी समय बंजर समझी जाने वाली इसी जमीन में लोग आज साल में दो बार फसल ले रहे हैं। टमाटर इस गाँव की मुख्य उपज बन गया है। टमाटर बाजार में जाने के लिए रास्ते की आवश्यकता थी। इसके लिए गाँव वालों ने सरकार की राह नहीं देखी। स्वयं श्रमदान कर रास्ता बनाया।

उद्योग की ओर

फिर गाँव वालों ने और एक कदम आगे बढ़ाया। टमाटर पर प्रक्रिया कर सॉस बनाने के लिए ढगेवाड़ी में ही अंबे अभिनव टमाटर सॉस उत्पादन सहकारी संस्था स्थापित की। इस प्रकल्प में प्रतिवर्ष बीस-पच्चीस टन टमाटर का सॉस बनाया जाता है। पुणे, मुम्बई में यह सॉस बिकता है। इसकी कीमत बड़ी कंपनियों के सॉस से करीब तीस प्रतिशत कम रहती है। उल्लेखनीय है कि यह इस क्षेत्र के आदिवासीयों की मिल्लियत का पहला प्रकल्प है। पैंतीस आदिवासी इसके सदस्य हैं।

सार्वजनिक निर्णय गाँव वाले एक साथ बैठकर लेते हैं। व्यक्तिगत विवाद भी गाँव में ही हल किए जाते हैं। **गाँव पूरी तरह से व्यसनमुक्त है।** पहले गाँव में साक्षरों की संख्या बहुत कम थी, आज कई विद्यार्थी महाविद्यालय में भी पढ़ते हैं।

संपर्क :

वनवासी कल्याण आश्रम महाराष्ट्र
15 कृषि नगर कॉलेज रोड नासिक-42200
महाराष्ट्र दूरभाष-91-0253-2577491,2582429

**नेत्र कुम्भ चिकित्सालय**

सी-136, निराला नगर, लखनऊ

संचालन : किंगजार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं अन्त्योदय हेल्थ मिशन 1 अप्रैल 2019 से 31 दिसम्बर 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण
माह नवम्बर 2019 तक माह दिसम्बर 2019 योग सत्र 19-20

नेत्र परीक्षण	3108	304	3412
चश्मा वितरण	1821	169	1990
मोतियाबिन्दु आपरेशन	59	19	78
पैथॉलॉजी	91	41	132

आलोक :-नेत्र एवं पैथॉलाजिकल जाँच केवल 20/- के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

1 अप्रैल 2019 से 31 दिसम्बर 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह नवम्बर 2019 तक में लाभान्वित रोगी	माह दिसम्बर 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल लाभान्वित रोगी
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	445	67	512
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	1395	116	1511
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	574	37	611
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	443	37	480
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	00	00	00
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	307	14	321
कुल लाभान्वित रोगी			3164	271	3435

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	6998	941	7939
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	4138	510	4648
कुल लाभान्वित रोगी संख्या			11136	1451	12587

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	2675	302	2977
----	-------------	--------------------	------	-----	------

1 अप्रैल 2019 से 31 दिसम्बर 2019 तक कुल लाभान्वित रोगी सं. 18999

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह नवम्बर 2019 तक	माह दिसम्बर 2019 में	योग सत्र 19-20
1.	उत्तर प्रदेश	46273	6453	52726
2.	उत्तराखण्ड	362	12	374
3.	बिहार	30553	3939	34492
4.	झारखण्ड	3701	463	4164
5.	उड़ीसा	457	104	561
6.	मध्य प्रदेश	2520	182	2702
7.	छत्तीसगढ़	443	32	475
8.	राजस्थान/गुजरात	109	13	122
9.	महाराष्ट्र	259	58	317
10.	नेपाल	526	39	565
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	164	83	247
12.	पश्चिम बंगाल	752	30	782
13.	अन्य प्रान्त	646	56	702
योग		86965	11464	98429



**एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन
सफदरजंग, नई दिल्ली में
प्रान्तशः ठहरने वाले
लाभार्थियों की संख्या
1 अप्रैल 2019 से
31 दिसम्बर 2019 तक**

भारतीय राज्य/देश	नवम्बर 2019 तक	दिसम्बर 2019	कुल योग 2019-20
बिहार	2858	291	3149
उत्तर प्रदेश	2462	308	2770
मध्य प्रदेश	552	107	659
झारखण्ड	434	46	480
राजस्थान	362	37	399
पश्चिम बंगाल	338	45	383
उत्तराखण्ड	368	63	431
हरियाणा	210	18	228
नेपाल	274	31	305
उड़ीसा	91	16	107
जम्मू और कश्मीर	140	20	160
छत्तीसगढ़	38	7	45
असम	61	15	76
गुजरात	17	—	17
हिमाचल प्रदेश	16	3	19
महाराष्ट्र	15	3	18
दिल्ली	29	4	33
त्रिपुरा	27	—	27
पंजाब	18	5	23
मनीपुर	03	3	06
अरुणाचल प्रदेश	11	—	11
आंध्र प्रदेश	00	—	00
चंडीगढ़	00	—	00
केरल	22	4	26
सिक्किम	09	—	09
तेलंगाना	00	—	00
बांग्लादेश	00	—	00
तमिलनडु	23	1	24
अफगानिस्तान	00	—	00
मिजोरम	02	—	02
कुल	8380	1027	9407

**राज्यानुसार
एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन
पटना, बिहार में प्रान्तशः
ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या
नवम्बर 2019 से 31 दिसम्बर 2019 तक**

भारतीय राज्य/देश	नवम्बर 2019 में	दिसम्बर 2019 में	कुल योग
बिहार	1046	497	1543
उत्तर प्रदेश	10	2	12
मध्य प्रदेश	00	00	00
झारखण्ड	16	8	24
राजस्थान	00	00	00
पश्चिम बंगाल	00	3	3
उत्तराखण्ड	00	00	00
हरियाणा	00	00	00
नेपाल	06	7	13
उड़ीसा	00	00	00
जम्मू और कश्मीर	00	00	00
छत्तीसगढ़	00	00	00
असम	00	00	00
गुजरात	00	00	00
हिमाचल प्रदेश	00	00	00
महाराष्ट्र	00	00	00
दिल्ली	00	00	00
त्रिपुरा	00	00	00
पंजाब	00	00	00
मनीपुर	00	00	00
अरुणाचल प्रदेश	00	00	00
आंध्र प्रदेश	00	00	00
चंडीगढ़	00	00	00
केरल	00	00	00
सिक्किम	00	00	00
तेलंगाना	00	00	00
बांग्लादेश	00	00	00
तमिलनडु	00	00	00
अफगानिस्तान	00	00	00
मिजोरम	00	00	00
कुल	1078	517	1595



सुश्रुत की “शल्य” चिकित्सा

आचार्य सुश्रुत प्राचीन काल के एक उच्चकोटि के आयुर्वेदाचार्य एवं शल्यतन्त्र निष्णात शल्य-चिकित्सक थे।

सुश्रुत संहिता में उल्लेख है कि सुश्रुत महर्षि विश्वामित्र के पुत्र थे और इन्होंने धन्वन्तरि जी से शल्य शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की थी—

धन्वन्तरिधर्मभृतां वरिष्ठो वाग्विशारदः।

विश्वामित्रसुतं शिष्यमृषिं सुश्रुतमन्वशात् ॥

दूसरी एक परम्परा के अनुसार सुश्रुत महर्षि शालिहोत्र के सुपुत्र थे। काश्यपसंहिता की प्रस्तावना में हेमाद्रिकृत लक्षण—प्रकाश के अश्व प्रकरण में एक वचन इस प्रकार आया है—

**शालिहोत्रमृषिश्रेष्ठं सुश्रुतः
परिपृच्छति।**

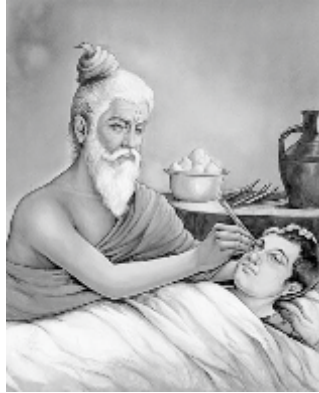
एवं पृष्ठस्तु पुत्रेण

शालिहोत्रोऽयभाषत ॥

अर्थात् शालिहोत्र नामक श्रेष्ठ ऋषि से सुश्रुत प्रश्न करते हैं, इस प्रकार पुत्र के प्रश्न करने से पिता शालिहोत्र पुत्र सुश्रुत से कहते हैं।

आचार्य सुश्रुत शल्य-शास्त्र के विशेषज्ञ थे। उन्होंने वह विद्या दिवोदास धन्वन्तरि से प्राप्त की थी।

साक्षात् धन्वन्तरिका ही अवतार होने से लोग दिवोदास को धन्वन्तरि ही कहते हैं। पृथ्वी पर वे ही सर्वप्रथम इस शल्यतन्त्र को लाये थे। एक बार बहुत से जिज्ञासु शिष्यभाव से धन्वन्तरिजी के पास गये और करबद्ध प्रार्थना की कि 'आप हमें 'शल्यतन्त्र' का ज्ञान प्रदान कीजिये।' धन्वन्तरि ने कहा— 'तुम लोगों के प्रतिनिधिरूप में सुश्रुत को ही मैं 'शल्यतन्त्र' सिखाऊँगा। इस प्रकार सुश्रुत ने गुरु धन्वन्तरि से शल्यतन्त्र का ज्ञान प्राप्त किया। बाद में सुश्रुत ने सुश्रुतसंहिता नामक एक बृहद् ग्रन्थ लिखा, जो पाँच स्थानों— (1) सूत्रस्थान, (2) निदानस्थान, (3)



शारीरस्थान, (4) चिकित्सास्थान और (5) कल्पस्थान में विभक्त है तथा अन्त में उत्तरतन्त्र है। इस संहिता में शस्त्रकर्म की ही प्रधानता है— अस्मिन्स्तु शास्त्रे शास्त्रकर्म— प्राधान्यात् 0' (सुश्रुत सू० 5/4)

मन एवं शरीर को पीड़ित करने वाली वस्तु को शल्य कहा जाता है और इस शल्य को निकालने वाले साधन यन्त्र कहलाते हैं— तंत्र मनः शरीराबाधकराणि शल्यानि, तेषामाहरणं— पायो यान्त्रिण। (सुश्रुत सू० 07/4) आचार्य सुश्रुत ने अपने ग्रन्थ में सौ से भी अधिक (यन्त्रशतमेकोत्तरम्) शल्य—शास्त्रों का वर्णन किया है।

आचार्य सुश्रुत त्वचारोपण—तन्त्र में भी अति निष्णात थे। आँखों के मोतीबिंदु (कैटरैक) निकालने की सरल कला के वे विशेषज्ञ थे। यदि मातृ-गर्भ से शिशु योग्य मार्ग से न आता हो, तो मातृ-गर्भस्थ शिशु को निर्विघ्न बाहर निकालने के विविध प्रकार सुश्रुत अच्छी तरह से जानते थे। इसका विवरण सुश्रुतसंहिता में लिखा है।

आजकल ऑपरेशन के लिये जिन-जिन यन्त्रों का उपयोग होता है उनमें से अधिकांश विवरण 'सुश्रुतसंहिता' में हैं।

शल्य-चिकित्सा का उल्लेख आयुर्वेद से भी पहले के अथर्ववेद में हुआ है, इसलिये आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद कहा जाता है।

लोक कल्याणार्थ प्राचीन भारतीय आयुर्वेद एवं शल्य-चिकित्सा-शास्त्र विश्व को बड़े पुरस्कार-रूप में प्राप्त है। आधुनिक जगत् इनका सफल उपयोग करके रोगी जीवों को निरोग बना सकें तो कितना अच्छा होगा।

कल्याण विशेषांक के आरोग्य अंक पृष्ठ सं०-674 से सभार



सदस्यता शुल्क

पुनश्च, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुगृहीत करें।

सेवा संवाद ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,
प्रबन्धक,
'सेवा संवाद'
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/है। इस निमित्त वार्षिक शुल्क 200/- अथवा आजीवन शुल्क 2000/- रुपये 'सेवा संवाद' के पक्ष में नकद/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं.दिनांक.....बैंक.....द्वारा भेज रहा हूँ/रही है। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है :

नाम :
पता :
जिला :
प्रदेश :
मोबाइल :
आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102(IFSC: BKID0006806) में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य-गीत, कथा-कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य है। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख एक पेज में चित्र सहित टाइप किया वर्ड फाइल (World File) में भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें।

हमारा पता है—

सेवा संवाद

सी-91, निरालानगर, लखनऊ 226020 (उ.प्र.0)

E-Mail: sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

मो0 7081241700, 9454049918



शोक सम्वेदना

मौन साधक कीर्तिशेष संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्याम लाल जी का भौतिक शरीर एक लम्बी बीमारी के उपरान्त भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में दिनांक 13 जनवरी 2020 को प्रातः 05:20 पर शान्त हो गया। 22 दिसम्बर 1947 में जन्मे श्री श्याम लाल जी ने एम. एस. सी. एम. एड. की शिक्षा कासगंज में पूर्ण की, तदुपरान्त राष्ट्र सेवा के निमित्त वे सन् 1971 में संघ के प्रचारक बने। संघ के सम्पर्क में आकर भौतिक सुख सुविधाओं तथा विलासिता के जीवन से परे एक आदर्श तपस्वी, मनस्वी, सेवाभावी जन-सेवी सरस्वती के आराधक बन कर जीवन पर्यन्त राष्ट्र और समाज की सेवा करते रहे। अपने जीवन काल में न उन्होंने कभी किसी के प्रति द्वेष भाव रखा और न ही किसी से उन्हें कोई शिकायत रही। एक कर्मयोगी की भांति वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मूल भावना के अनुरूप कार्य करते रहे। कालान्तर में 1990 से विद्याभारती की योजनानुसार मेरठ प्रान्त के संगठन मंत्री, 2000 से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संगठन मंत्री, 2013 से अखिल भारतीय सेवा प्रमुख (विद्या भारती) के दायित्वों का बखूबी निर्वहन करते रहे। इन्होंने उत्तराखण्ड के दुर्गम क्षेत्रों में पदयात्रा करते हुए शिशु मंदिर-विद्या मंदिरों की स्थापना प्रचार-प्रसार एवं विकास में अविस्मरणीय योगदान किया है। ऐसे कर्तव्य निष्ठ, सरल, ध्येयनिष्ठ तपस्वी को अपने बीच न पाकर विद्या भारती से जुड़े हुए हम सभी दुखी हैं।

कीर्तिशेष श्यामलाल जी की दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान कर मोक्ष प्रदान करने के लिए हम सभी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए विनती करते हैं हे प्रभु! श्याम लाल जी के परिवार, निकटस्थ सभी आत्मीय जनों को इस वेदना को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सेवा संवाद एवं सेवा चेतना पत्रिका परिवार के हम सभी बन्धु भगिनी दिवंगत आत्मा को प्रणाम करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



सन्देश

सुख दुख दोनों हैं अखिल परिवर्तन के रंग ।
कभी हास-परिहास तो, कभी रंग में भंग ॥

उसके आँसू पोछिए, जो बेबस लाचार ।
ईश्वर बसते हर जगह समझो बारम्बार ॥

सभी सुखी हों यह सदा, भारत का उद्घोष ।
संस्कृति का यह है अखिल अक्षय अमृत कोष ॥

नशा नशीले वस्तु से अखिल रहें नित दूर ।
सबके होंगे आप प्रिय मिले प्यार भरपूर ॥

वेद उपनिषद कह रहे गीता और कुरान ।
माँ ईश्वर का रूप है करें सदा सम्मान ॥

डॉट पिता आशीष है समझो बारम्बार ।
सुनो, गुनो पालन करो होगा बेड़ा पार ॥



एक अहर्निश सेवायात्री - दामोदर गणेश बापट

ना तो वे कुष्ठ रोगी थे न ही उन्होंने किसी अपने को देह गला कर हाथ पैर टूट कर देने वाली इस भयानक बीमारी से जूझते देखा था। फिर भी जीवन के 46 वर्ष एक स्वस्थ व्यक्ति ने उन कुष्ठ रोगियों की सेवा में बिता दिए जिन्हें देख कर लोग घृणा से मुंह फेर लेते थे। क्या मां, क्या बेटा या फिर पत्नी सबसे नजदीकी रिश्ते भी जिनसे पल्ला झाड़ लेते थे ऐसे अभिशप्त रोगियों की मरहम पट्टी से लेकर उनके आर्थिक



व सामाजिक पुनर्वास की लंबी लड़ाई लड़ी श्री दामोदर गणेश बापट ने। छत्तीसगढ़ के चांपा जिले के सौंठी में स्थित 125 एकड़ में फैले भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा में बापट जी ने कुष्ठ रोगियों को आत्म सम्मान व स्वावलंबी जीवन जीने की राह दिखाई। जीवनभर सेवा के पथ पर चलकर 2018 में पद्मश्री से सम्मानित होने वाले इस आधुनिक संत ने अंत में अपना शरीर भी मेडिकल रिसर्च के लिए दान कर दिया।

महाराष्ट्र के अमरावती जिले के छोटे से गांव पथरोट में 29 अप्रैल 1935 को जन्मे बापट जी बचपन से ही संघ के स्वयंसेवक थे। पिता गणेश विनायक बापट व मां लक्ष्मी देवी संघ के संस्थापक हेडगोवार जी को ईश्वर का अवतार मानते थे। क्योंकि बाल्यकाल में घोर गरीबी से जूझ रहे गणेश विनायक जी के रहने भोजन व पढ़ाई की निःशुल्क व्यवस्था पूजनीय डॉक्टर साहब ने ही की थी। यही भाव इस दंपति की तीसरी संतान गणेश में था। बी-कॉम करने के बाद जब गणेश का व्यवसाय में मन नहीं लगा तो वो 32 वर्ष की उम्र में वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़कर घोर वनवासी गांव जशपुर में बच्चों को पढ़ाने लगे।

कात्रे जी व बापट जी का मिलना मानो नियति का रचा हुआ प्रसंग था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे कोलकाता में नरेन्द्र की राह देख रहे थे, ठीक वैसी ही अवस्था भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा के संस्थापक कात्रे गुरुजी की थी जो कुष्ठ रोग के प्रकोप से टूट हो चुके हाथ पैरों से दस वर्ष से आश्रम की व्यवस्था संभाल रहे थे। बापट जी 1972 में पहली बार जब आश्रम देखने चांपा पहुंचे तब

से वहीं के होकर रह गए। समय के साथ कात्रे जी और कमजोर होते गये तब बापट जी इस सेवाश्रम का प्रबंधन अपने हाथों में लेकर कात्रे जी के सपने को पूरा करने में जुट गए। इस युवा प्रबंधक के समक्ष कई चुनौतियां थीं। उन दिनों स्वस्थ हो चुके कुष्ठ रोगी भी डिप्रेशन का शिकार थे। क्योंकि वे सभी अपने आप को नकारा व समाज के लिए अभिशाप मानते थे। किंतु बापट जी ने मरीजों की स्वयं मरहम पट्टी कर बाकी समाज को यह संदेश दिया कि छूने से कुष्ठ नहीं फैलता है। वे देशभर में घूम कर न सिर्फ आश्रम के लिए धन संग्रह करते रहे बल्कि कुष्ठ के बारे में समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहे। मरीज मन से भी पूरी तरह स्वस्थ हो जाएं इसलिए आश्रम में सब्जियां उगाने से लेकर चॉक बनाने, दरी व रस्सी बनाने जैसे काम शुरू किए। आश्रम पर खुद को भार समझने वाले रोगी जब खुद कमाने लगे तो संतोष से उनके चेहरे खिल उठे।

बापट जी के साथ वर्षों से आश्रम का प्रबंधन देख रहे संघ के प्रचारक सुधीर देव जी बताते हैं कि 4 एकड़ भूमि पर बना माधव सागर तालाब कुष्ठ रोगियों ने स्वयं बहुत दिनों तक मेहनत कर तैयार



किया है। आज आश्रम वासियों के सहयोग से 65 एकड़ भूमि पर खेती एवं 5 एकड़ भूमि पर बागवानी की जाती है। खेती से ना सिर्फ आश्रम वासियों की जरूरतें पूरी होती हैं बल्कि सालाना 13 लाख रुपए की आमदनी भी होती है।



शुरू किया। इस हॉस्पिटल में कैंप लगाकर मोतियाबिंद के ऑपरेशन निःशुल्क किए जाते हैं। अब तक 10,000 से अधिक सफल ऑपरेशन किए गए हैं। गरीब वनवासी बालकों के लिए सुशील बाल गृह के नाम से छात्रावास शुरू किया गया। जीवन भर पुरस्कारों से दूर रहकर सादगी पूर्ण जीवन बिताने वाले बापट जी ने पद्मश्री

बापट जी एक कुशल प्रशासक के साथ-साथ एक प्रखर विचारक भी थे, इसलिए

जब कुष्ठ आश्रम की क्षमता बढ़ी तो वहां कुष्ठ रोगियों के साथ ही टी.बी. के रोगियों के इलाज के लिए 20 बिस्तरों का संत घासीदास अस्पताल भी

मिलने पर कहा था कि "मेरा सच्चा पुरस्कार वह स्वस्थ मनुष्य है जो आश्रम में कुष्ठ रोग का इलाज कराने के बाद अपने परिवार में लौट गया है।

व्रत-त्योहार, फरवरी 2020

दिनांक	दिन	व्रत-त्योहार
1	बुधवार	रथ सप्तमी
2	गुरुवार	भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत
3	शुक्रवार	महानन्दा नवमी
4	शनिवार	रोहिणी व्रत
5	रविवार	जया एकादशी
7	मंगलवार	प्रदोष व्रत
9	गुरुवार	माघ पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, पूर्णिमा, सत्य व्रत, सत्य व्रत, रविदास जयंती, माघस्नान समाप्त
12	रविवार	संकष्टी गणेश चतुर्थी
13	सोमवार	कुंभ संक्रांति
14	मंगलवार	वैलेंटाइन्स डे
15	बुधवार	कालाष्टमी
17	शुक्रवार	श्री रामदास नवमी
19	रविवार	शिवजी जयंती
20	सोमवार	प्रदोष व्रत
21	बुधवार	महाशिवरात्रि, मास शिवरात्रि
23	गुरुवार	अमावस्या
24	शुक्रवार	चंद्र दर्शन, सोमवार व्रत
25	शनिवार	फुलेरा दूज, रामकृष्ण जयंती
27	रविवार	वरद चतुर्थी
28	मंगलवार	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
29	गुरुवार	षष्ठी



पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्ग दर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरुषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है—सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 फरवरी	पुण्य तिथि	प्रखर पत्रकार : रूसी करंजिया
2 फरवरी	जन्मदिवस	हिन्दुस्थान समाचार के संस्थापक दादासाहब आपटे
4 फरवरी	इतिहास—स्मृति	गढ़ आया, पर सिंह गया
4 फरवरी	बलिदान दिवस	धर्मवीर हकीकतराय
5 फरवरी	जन्मदिवस	देशभक्त अच्युत पटवर्धन
6 फरवरी	जन्मदिवस	ऐ मेरे वतन के लोगों के रचनाकार : रामचन्द्र द्विवेदी 'प्रदीप'
7 फरवरी	पुण्य तिथि	विलक्षण संन्यासी : करपात्री जी महाराज
9 फरवरी	पुण्य तिथि	अखण्ड सेवाव्रती : बाबा आम्टे
10 फरवरी	बलिदान दिवस	शहीद सोहनलाल पाठक
10 फरवरी	बलिदान दिवस	राजा बख्तावर सिंह
11 फरवरी	समर्पण—दिवस	जब सेल्यूलर जेल राष्ट्र को समर्पित राष्ट्रीय स्मारक
12 फरवरी	बलिदान दिवस	पूर्वांचल के महान् क्रान्तिकारी वीर शम्भुधन फुंगलो
13 फरवरी	जन्मदिवस	परमहंस बाबा राममंगलदास
16 फरवरी	जन्मदिवस	महाप्राण निराला
16 फरवरी	जन्मदिवस	इतिहास पर भारतीय दृष्टि ठाकुर रामसिंह
17 फरवरी	बलिदान दिवस	सदी का शेर : वासुदेव बलवन्त फड़के
17 फरवरी	पुण्य तिथि	सशस्त्र क्रान्ति के नायक लहूजी साल्वे
18 फरवरी	बलिदान दिवस	अग्निधर्मी पत्रकार रामदहिन ओझा
19 फरवरी	जन्मदिवस	तपस्वी जीवन : श्री गुरुजी
20 फरवरी	जन्म—तिथि	महात्मा ज्योतिबा फुले
20 फरवरी	जन्मदिवस	हिमालय पुत्र : डॉ० नित्यानन्द
21 फरवरी	बलिदान दिवस	अमर बलिदानी : वीरेन्द्रनाथ दत्त
21 फरवरी	पुण्य तिथि	गान्धी जी के जीवन में कस्तूरबा का योगदान
22 जनवरी	पुण्य तिथि	सेवा का अक्षय वट : माधवराव परलकर
23 फरवरी	जन्म—तिथि	भगतसिंह के चाचा : अजीत सिंह
24 फरवरी	बलिदान दिवस	लोकदेवता : कल्ला जी राठौड़
25 फरवरी	पुण्य तिथि	काले कपड़ों वाले जनरल : लाल केदार नाथ सहगल
26 फरवरी	पुण्य तिथि	हिन्दी, हिन्दु और हिन्दुस्थान के प्रेमी वीर सावरकर
27 फरवरी	बलिदान दिवस	चन्द्रशेखर आजाद
27 फरवरी	जन्मदिवस	संकीर्तन द्वारा धर्म बचाने वाले चैतन्य महाप्रभु
28 फरवरी	प्राकट्य—दिवस	भक्ति आन्दोलन के उन्नायक सन्त दादू
28 फरवरी	बलिदान दिवस	सम्बलपुर का क्रान्तिकारी वीर सुरेन्द्र साई



समर्पित जीवन

समाज में मौजूद अनेक बुराईयों एवं दूसरों की कमियों पर चर्चा करने वाले लोग हर मोड़ पर मिल जाते हैं। स्वतंत्रता के बाद सात दशक तक भी समाज कुछ वर्गों तथा दूरदराज के क्षेत्रों में यदि विकास की किरण नहीं पहुँच सकी है तो उसके लिए सरकार



को लगातार दोषी ठहराने वाले लोग भी हर तरफ दिखायी देते हैं। समाचार पत्रों से लेकर टेलीविजन चैनलों तथा सोशल मीडियों के तमाम मंचों पर भी अक्सर ऐसी चर्चाएं खूब होती हैं। किन्तु समाज में मौजूद किसी बुराई को समाप्त करने का संकल्प लेकर शुरुआत करने वाले, किसी तात्कालिक समस्या के समाधान हेतु अपने स्तर पर प्रयास शुरू करने वाले अथवा सरकार के भरोसे बैठे रहने की बजाए अपना विकास स्वयं करने की मिसाल प्रस्तुत करने वाले लोग बहुत कम दिखायी देते हैं। लेकिन इसके विपरीत यह भी सच है कि समाज जीवन के अनेक क्षेत्रों में आज यदि बेहतर माहौल दिखायी देता है उसमें ऐसे जीवनव्रतियों का बहुत अधिक योगदान है जिन्होंने अपनी अथवा अपने परिवार की खुशियों की परवाह किये बगैर दूसरों के मुरझाये हुए चेहरों पर मुस्कान लौटाने हेतु अपना पूरा जीवन और अपनी तमाम व्यक्तिगत आकांक्षाओं की बलि दे दी। ये ऐसे चेहरे हैं जिन्होंने न कभी किसी समाचार पत्र में अपनी फोटो छपवाने का प्रयास किया और न ही कभी किसी टेलीविजन पर आकर समाज में आए बदलाव का श्रेय लेने का प्रयास किया। ये ऐसे नींव के पत्थर हैं जिन्हें सकारात्मक बदलाव की वर्तमान तस्वीर में कहीं दूँढ़ पाना भी बहुत मुश्किल है। उनके योगदान को सिर्फ वे ही लोग महसूस करते हैं, जो उस बदलाव के साक्षी हैं।

कुष्ठ रोग ऐसी बीमारी है, जिसे लेकर समाज में अनेक भ्रांतियां व्याप्त हैं। जिस व्यक्ति को यह बीमारी हो जाती है उसका जीवन तो नर्क समान बन ही जाता है साथ ही उसके स्वस्थ परिवारजनों का जीवन भी कष्टमय हो जाता है। आज यदि देश में

अनेक स्थानों पर कुष्ठ रोग को समाप्त करने तथा इस बीमारी से ग्रस्त लोगों के ईलाज तथा स्वस्थ हो चुके लोगों के पुनर्वास का एक अच्छा दृश्य दिखायी देता है तो उसका श्रेय सरकार से अधिक उन लोगों को जाता है जिन्होंने इस बीमारी से ग्रस्त लोगों के अंदर

सम्मान से जीवन जीने की लौ जगायी और उन्हें स्वावलंबी जीवन जीने योग्य बनाया। ऐसा ही एक नाम है कात्रे गुरुजी का, जिन्होंने वर्तमान छत्तीसगढ़ के चांपा में ऐसा ही प्रेरक प्रयोग किया। समाज में ऐसे बहुत से प्रयोग हुए हैं जिनके माध्यम से लाखों लोगों के जीवन में स्वाभिमानपूर्वक जीने की एक उम्मीद जगी है। कहीं विखंडित समाज में फिर से समरसता स्थापित हुई है तो कहीं रोजगार के अभाव में पलायन को मजबूर दूरदराज एवं सीमावर्ती क्षेत्रों के लोग अपने ही स्थान पर सम्मानपूर्वक जीवन जी रहे हैं। कहीं बढ़ते वैश्विक तापमान और पर्यावरण असंतुलन के कारण पूरे विश्व के समक्ष उत्पन्न संकट के समाधान हेतु अनुकरणीय प्रयास हुए हैं तो कहीं जैव विविधता के संरक्षण हेतु कुछ लोगों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। कहीं युगानुकूल ग्राम विकास के अद्भुत प्रयोग हुए हैं तो कहीं शहरों की सेवा बस्तियों में मूलभूत सुविधाओं के अभाव में नारकीय जीवन जीने को मजबूर लोग सम्मानपूर्वक जीवन जीने लगे हैं। जो लोग कल तक अपने पैरों पर खड़े होने के लिए दूसरों की मदद ले रहे थे, वही आज स्वयं सशक्त होकर अपने ही समाज के दूसरे अभावग्रस्त लोगों को सशक्त बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

ऐसे कुछ तपस्वियों का स्मरण करना हो तो मरिष्ठक में सैंकडों नाम उभरते हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से पांच सौ से अधिक ग्रामों को अपना विकास स्वयं करने के लिए प्रेरित कर पूरी दुनिया के सामने स्वावलंबी ग्राम, विवादमुक्त ग्राम, सम्पूर्ण साक्षर ग्राम, उर्जायुक्त ग्राम, पूर्णतः बाहय शौचमुक्त ग्राम आदि के रूप में एक मिसाल प्रस्तुत



करने वाले चित्रकूट शिल्पी नानाजी देशमुख एक ऐसा ही नाम है। कर्नाटक के दूरस्थ क्षेत्रों में सामाजिक बदलाव का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करने वाले हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान के हजारों सेवाव्रतियों की प्रेरणा अजित कुमारजी और भूकम्प की विभाषिका के बाद उत्तराखण्ड के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थानीय पर्यावरण के अनुकूल आधुनिक विकास का प्रेरक मॉडल विकसित कर सैंकड़ों ग्रामों में उसे मूर्त रूप प्रदान करने वाले डा नित्यानंदजी को आखिर कौन भुला सकता है? सेवा भारती के माध्यम से शहरों की सेवा बस्तियों में रहने वाले लाखों अभावग्रस्त लोगों के जीवन में गुणवत्तापूर्ण बदलाव लाने की पहल करने वाले विष्णु कुमारजी और अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से देश के करोड़ों वनवासियों में स्वाभिमान का भाव जागृत कर अपने

जीवन मूल्यों एवं समृद्ध परम्पराओं को संरक्षित करते हुए विकास की मुख्यधारा से जोड़ने वाले रमाकान्त केशव देशपांडे भी ऐसे ही नाम हैं। हमारे आसपास भी ऐसे अनेक नाम हो सकते हैं। ये ऐसे चहरे हैं। जिन्होंने नींव का पत्थर बनकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन के ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जिनसे सैंकड़ों नहीं बल्कि हजारों, लाखों लोगों के जीवन को नई दिशा मिली है। ऐसे तपस्वी, समाज जीवन के हर क्षेत्र में दिखायी देते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में तो ऐसे समर्पित जीवनव्रतियों की बहुत लंबी श्रृंखला है जिन्होंने संघ संस्थापक डॉ० हेडगेवार के प्रसिद्धि परांगमुखता के सूत्र का पालन करते हुए समाज में परिवर्तन की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत की है। इस स्तंभ के तहत कुछ ऐसे ही समर्पित जीवन से आपका परिचय कराने का प्रयास है।



संघर्ष

नदी पहाड़ों की कठिन व लम्बी यात्रा के बाद तराई में पहुंची। उसके दोनों ही किनारों पर गोलाकार, अण्डाकार व बिना किसी निश्चित आकार के असंख्य पत्थरों का ढेर सा लगा हुआ था। इनमें से दो पत्थरों के बीच आपस में परिचय बढ़ने लगा। दोनों एक दूसरे से अपने मन की बातें कहने-सुनने लगे।

इनमें से एक पत्थर एकदम गोल-मटोल, चिकना व अत्यंत आकर्षक था जबकि दूसरा पत्थर बिना किसी निश्चित आकार के, खुरदरा व अनाकर्षक था।

एक दिन इनमें से बेडौल, खुरदरे पत्थर ने चिकने पत्थर से पूछा, "हम दोनों ही दूर ऊंचे पर्वतों से बहकर आए हैं फिर तुम इतने गोल-मटोल, चिकने व आकर्षक क्यों हो जबकि मैं नहीं?"

यह सुनकर चिकना पत्थर बोला, "पता है शुरुआत में मैं भी बिलकुल तुम्हारी तरह ही था लेकिन उसके बाद मैं निरंतर कई सालों तक बहता और लगातार टूटता व घिसता रहा हूं ना जाने मैंने कितने तूफानों का सामना किया है कितनी ही बार नदी के तेज थपेड़ों ने मुझे चट्टानों पर पटका है, तो कभी अपनी धार से मेरे शरीर को काटा है, तब कहीं

जाकर मैंने ये रूप पाया है।

जानते हो, मेरे पास हेमशा ये विकल्प था कि मैं इन कठनाइयों से बच जाऊं और आराम से एक किनारे पड़ा रहूँ पर क्या ऐसे जीना भी कोई जीना है? नहीं, मेरी नजरों में तो ये मौत से भी बदतर है!

तुम भी अपने इस रूप से निराश मत हो। तुम्हें अभी और संघर्ष करना है और निरंतर संघर्ष करते रहे तो एक दिन तुम मुझसे भी अधिक सुंदर, गोल-मटोल, चिकने व आकर्षक बन जाओगे।

मत स्वीकारो उस रूप को जो तुम्हारे अनुरूप ना हो तुम आज वही हो जो मैं कल था। कल तुम वही होगे जो मैं आज हूँ या शायद उससे भी बेहतर!", चिकने पत्थर ने अपनी बात पूरी की।

दोस्तों, संघर्ष में इतनी ताकत होती है कि वो इंसान के जीवन को बदल कर रख देता है। आज आप चाहे कितनी ही विषम पारिस्थिति में क्यों न हों संघर्ष करना मत छोड़िये। अपने प्रयास बंद मत करिए। आपको बहुत बार लगेगा कि आपके प्रयत्नों का कोई फल नहीं मिल रहा लेकिन फिर भी प्रयत्न करना मत छोड़िये। और जब आप ऐसा करेंगे तो दुनिया की कोई ताकत नहीं जो आपको सफल होने से रोक पाएगी।



भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निराला नगर, लखनऊ - 226020 (उ.प्र.)

फोन-फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित कार्पस फण्ड से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए-** रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए-** रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए-** रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए-** रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए-** प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए-** रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए-** रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए-** रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में जो **लखनऊ** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **680610100009948 IFSC: BKID0006806**

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **30448433657 IFSC: SBIN0003813**

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।



पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र



ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

अनुरोध



जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्त्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाउराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Antyodaya Health Mission (Bhaorao Deoras Seva Nyas) A/c No. 680610110009463 Bank of India, Nirala Nagar Lucknow (IFSC Code: BKID0006806) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

– राजेश (संयोजक)

मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।



बसन्तपंचमी

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

बसंत पंचमी या श्रीपंचमी एक हिन्दू त्योहार है। इस दिन विद्या की देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। यह पूजा पूर्वी भारत, पश्चिमोत्तर बांग्लादेश, नेपाल और कई राष्ट्रों में बड़े उल्लास से मनायी जाती है। इस दिन स्त्रियाँ पीले वस्त्र धारण करती हैं।

प्राचीन भारत और नेपाल में पूरे साल को जिन छह मौसमों में बाँटा जाता था उनमें वसंत लोगों का सबसे मनचाहा मौसम था।

जब फूलों पर बहार आ जाती, खेतों में सरसों का सोना चमकने लगता, जौ और गेहूँ की बालियाँ खिलने लगतीं, आमों के पेड़ों पर बौर आ जाता और हर तरफ रंग-बिरंगी तितलियाँ मँडराने लगतीं। भर भर भंवरे भंवराने लगते। वसंत ऋतु का स्वागत करने के लिए माघ महीने के पाँचवे दिन एक बड़ा जश्न मनाया जाता था जिसमें विष्णु और कामदेव की पूजा होती, यह वसंत पंचमी का त्यौहार कहलाता था। शास्त्रों में बसंत पंचमी को ऋषि पंचमी से उल्लेखित किया गया है, तो पुराणों-शास्त्रों तथा अनेक काव्यग्रंथों में भी



अलग-अलग ढंग से इसका चित्रण मिलता है। माँ सरस्वती की पूजा करने से अज्ञान भी ज्ञान की दीप जाते हैं!

**प्रणो देवी सरस्वती
वाजेभिर्वजिनीवती
धीनामणित्रयवतु।**

अर्थात् ये परम चेतना हैं। सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं। हममें जो आचार और मेधा है उसका आधार भगवती सरस्वती ही हैं। इनकी

समृद्धि और स्वरूप का वैभव अद्भुत है। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने सरस्वती से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था कि वसंत पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना की जाएगी और तभी से इस वरदान के फलस्वरूप भारत देश में वसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की भी पूजा होने लगी जो कि आज तक जारी है। पतंगबाजी का वसंत से कोई सीधा संबंध नहीं है। लेकिन पतंग उड़ाने का रिवाज हजारों साल पहले चीन में शुरू हुआ और फिर कोरिया और जापान के रास्ते होता हुआ भारत पहुँचा।

जो सत्य है, उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो उससे किसी को कष्ट होता है या नहीं, इस ओर ध्यान मत दो। दुर्बलता को कभी प्रश्रय मत दो। सत्य की ज्योति 'बुद्धिमान' मनुष्यों के लिए यदि अत्यधिक मात्रा में प्रखर प्रतीत होती है, और उन्हें बहा ले जाती है, तो ले जाने दो वे जितना शीघ्र बह जाएँ उतना अच्छा ही है।

स्वा मी विवेकानन्द



प्रकृति ही बचाएगी प्राण

इन दिनों पूरा भारत वायु प्रदूषण को चपेट में है लोगों को सांस तक लेने में दिक्कत महसूस हो रही है। वायु प्रदूषण का असर मनुष्य ही नहीं हर जीव—जंतु और यहां तक कि प्रकृति और आहार पर भी पड़ता है। आयुर्वेद में ऋतु के विपरित अति स्थिर अथवा अत्यंत वेगवाली, अति शील अथवा अति उष्ण, अति रूक्ष अथवा अति नम, अधिक बवंडर—युक्त, धूलिकण एवं धूमकणों से युक्त वायु भी विकृत वायु है। इस तरह की वायु को रोग पैदा करने और आयु कम करने वाली माना जाता है। विश्वभर में हुए विभिन्न अध्ययनों का निष्कर्ष है कि पीएम 2.5 या उससे छोटे धूलिकण विश्वभर में हो रही मौतों का पांचवां सबसे बड़ा कारण है। वायु प्रदूषण के कारण त्वचा, नाक, गले एवं आंखों से संबंधित बीमारियां होती हैं। इसके अलावा पीएम 2.5 एवं उससे छोटे कण श्वास—प्रश्वास के सहारे शरीर में प्रवेश करके सबसे पहले श्वास नलिकाओं तथा फेफड़ों में सूजन पैदा करते हैं। इंसुलिन के स्रोत एवं उपयोग प्रक्रिया पर भी वायु प्रदूषण का दुष्प्रभाव पड़ता है अतः मधुमेह होने का खतरा स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है। इसका हड्डियों के घनत्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए हड्डी टूटने का खतरा भी बढ़ जाता है। पीएम 10 वाले धूलिकण रक्त धमनियों के सहारे



मस्तिष्क हृदय एवं वृक्क तक पहुंच जाते हैं और धीरे—धीरे उन्हें नष्ट करने में समर्थ हो जाते हैं। ये गर्भनाल के सहारे गर्भस्थ शिशु तक पहुंचकर उसे भी क्षति पहुंचाने में समर्थ होता है। ये धूलिकण रक्तधमनियों में जमा होकर रक्तप्रवाह को भी बाधित करते हैं। परिणामतः हृदयाघात, मस्तिष्काघात जैसी बीमारियां होती हैं।

वायु प्रदूषण से बचने के लिए चेहरा ढक कर बाहर निकलें। इसके साथ ही प्रतिदिन सुबह—शाम पांच ग्राम अदरक और तुलसी के 10 पत्ते पानी में उबाल कर सेवन करें। सुबह—शाम एक गिलास दूध के साथ दो चम्मच च्यवनप्राश खाने से भी वायु प्रदूषण का प्रभाव नहीं पड़ेगा। च्यवनप्राश उपलब्ध न हो तो एक गिलास दूध में एक चम्मच हल्दी डालकर पी सकते हैं। नाक में दो—दो बूंद सरसों का तेल डालने से भी वायु प्रदूषण के प्रभाव को कम किया जा सकता है। आप किसी विशेषज्ञ की देखरेख में पंचकर्म भी करा सकते हैं। इसके साथ ही रहन—सहन और खान—पान का भी ध्यान रखें। परंतु इन सभी उपायों की सीमाएं हैं। अतः वायु प्रदूषण—जन्य विकृतियों से बचने के लिए दीर्घकालिक उपाय करना ही ठीक होगा। यह उपाय है हमारा जीवन प्रकृति से जुड़ा हो और हम उससे उतना ही ले, जितनी कि हमें जरूरत है।

मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो, उससे अतिशीघ्र फल प्राप्ति होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति का उपाय। एकाग्रता सीखो और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा। जो समस्त को प्राप्त करता है, वह अंश को भी प्राप्त कर सकता है।



सर्दी में स्नान जरूरी

सर्दियों में जुकाम, खांसी गले और जोड़ों में दर्द आम बात है। थोड़ी-सी लापरवाही से इस तरह की तकलीफें बढ़ जाती हैं। इन दिनों त्वचा प्रायः रूखी हो जाती है। नियमित स्नान नहीं करने अथवा बाल नहीं धोने से त्वचा, रोम एवं बालों पर एक परत जम जाती है इस कारण खुजली, चकत्ते, दाने आदि हो जाते हैं। इसलिए इन दिनों शारीरिक साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। प्रतिदिन स्नान जरूर करें, वह भी गर्म पानी से। अच्छे से धुले, सूखे और गर्म कपड़े ही पहने। नहाने से पहले शरीर पर सरसों, तिल, जैतून या नारियल तेल गर्म करके मालिश कर सकते हैं। तेल में हल्का कपूर अथवा अंगूरू मिला सकते हैं। संभव हो तो अंगूरू का लेप लगाएं। यह शीत को नष्ट करता है। बालों को भी नियमित रूप से धोएं और उसमें तेल लगाएं। नाक और कानों की नियमित सफाई करें और सप्ताह में कम से कम एक बार तेल अवश्य डालें।

प्रायः हम सर्दियों में पानी के लिए उदासीन हो जाते हैं। यह ठीक नहीं है। शरीर को सुचारू रूप से चलाने के लिए जल आवश्यक तत्व है। अतः इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। जल लेने की इच्छा न हो तो अच्छी मात्रा में सूप, दाल का पानी, मांस रस, गर्म दूध आदि लेते रहें। इन सबमें सोंठ काली मिर्च, छोटी पीपल, लौंग, इलायची, तेजपत्ता, जायफल, केसर, हल्दी आदि का चूर्ण यथावश्यक

तथा स्वाद के अनुसार प्रयोग करें। भोजन में भी गर्म और तरह पदार्थों का आधिकाधिक सेवन करें। ऐसा करते रहते से पाचन क्रिया सामान्य बनी रहती है। मल-मूल का उत्सर्जन ठीक तरह होता रहता है और बीमार पड़ने की संभावना कम हो जाती है। सर्दी-खांसी की शुरुआत में ही अदरक और तुलसी के रस के साथ शहद का प्रयोग शुरू कर दें। जोशान्दा का प्रयोग करें, भाप लें। तरल पदार्थ लेते रहें। सर्दी-खांसी बढ़ाने पर यदि बुखार हो जाएं



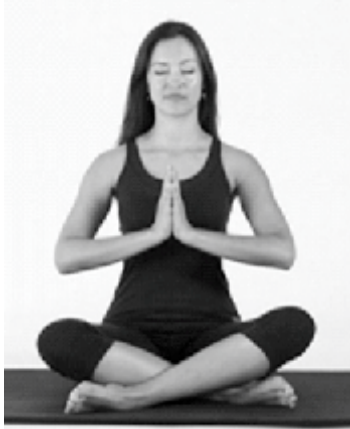
अथवा छाती में भारीपन और दर्द होने लगे तो किसी चिकित्सक को अवश्य दिखाएं। सर्दियों में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने एवं बनाए रखने के लिए केसरयुक्त च्यवनप्राश का प्रयोग करना अच्छा रहता है। योग-व्यायाम भी आवश्यक है। सर्दी में व्यायाम की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए।

व्यायाम से पहले ठंड से बचाव के सारे उपाय कर लें। व्यायाम के पश्चात तेल मालिश जरूर करें। इन दिनों बच्चों, वृद्धों और गर्भवती महिलाओं को खुले में योग-व्यायाम नहीं करना चाहिए। रात में सोने से पहले कमरे के दरवाजे, खिड़कियां अच्छी तरह बन्द कर लें। कहीं से हवा आएगी तो कमरा गर्म नहीं होगा और आपको रजाई के अंदर भी ठंड महसूस होगी। बैठने, काम करने एवं सोने का स्थान भी गर्म रहे तो अच्छा है। ऐसे उपायों से आप सर्दी से अपनी रक्षा कर सकते हैं।

“एक विचार लें. उस विचार को अपनी जिंदगी बना लें. उसके बारे में सोचिये, उसके सपने देखिये, उस विचार को जिए. आपका मन, आपकी मांसपेशिया, आपके शरीर का हर एक अंग, सभी उस विचार से भरपूर हो. और दुसरे सभी विचारों को छोड़ दे. यही सफलता का तरीका है।”- स्वामी विवेकानन्द



मानसिक शांति और अध्यात्म के लिए सहायक अंजलि मुद्रा



अंजलि मुद्रा को नमस्ते की मुद्रा भी कहते हैं। यह सामान्यतः किसी व्यक्ति या देवी-देवताओं का अभिवादन करने के लिए प्रयोग की जाती है। इसके अलावा योग करते समय भी इसका अभ्यास किया जाता है—जैसे सूर्य नमस्कार, वृक्षासन, वीर भद्रासन, पार्श्व उत्तानासन और ताड़ासन इत्यादि। इस मुद्रा के कई लाभ हैं। यह हाथों, उंगलियों, कलाईयों और बाजुओं में लचीलापन बढ़ाने, मस्तिष्क के दोनों गोलार्धों के बीच संतुलन स्थापित करने और मन से तनाव, चिंता तथा अवसाद आदि को दूर कर शांति लाने में सहायक है। स्वयं और दूसरों के प्रति सम्मान को बढ़ाना, आध्यात्मिकता से जुड़ना और ध्यान में प्रवेश करना इस मुद्रा के दूसरे लाभ हैं। इस मुद्रा को किसी भी आसन में किया जा सकता है। दोनों हथेलियों और उंगलियों को समान रूप से एक साथ जोड़े और उन्हें हृदय के पास छाती के बीच में रखें।



पेट और कमर की समस्याओं में लाभदायक पूर्वोत्तान आसन



शरीर में कमर से ऊपर के भागों को पूर्व और कमर से निचले हिस्से को पश्चिम कहते हैं, इसलिए योग में पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तान दो आसान हैं, जो एक-दूसरे के विपरीत हैं। योग में विपरीत आसन पहले आसन के दुष्प्रभावों को रोकने के लिए किया जाता है। यह एक अनिवार्य प्रक्रिया होती है। पूर्वोत्तर आसन कमर से ऊपर के भागों जैसे पेट, पीठ, गर्दन, कंधों, भुजाओं और आसन कलाईयों के जोड़ों इत्यादि को लचीला, मजबूत, स्वस्थ और सुंदर बनाने के लिए बहुत उपयोगी है। इस आसन के लिए पहले जमीन पर दोनों टांगों को सामने की तरफ एक साथ फैलाकर बैठ जाएं। दोनों हाथों की उंगलियां सामने की तरफ करके अपनी जाघों के पिछले हिस्से के दोनों तरफ रखें, फिर इसी भाग को ऊपर उठाते हुए गर्दन को पीछे की तरफ झुकाएं। इस आसन में 10 से 20 सांसों तक रुकें।



वंचित बच्चों के जीवन में ला रहे शिक्षा का प्रकाश



शिक्षा उज्ज्वल भविष्य की राह ही नहीं, सबका मौलिक अधिकार भी है। इस भास्कर ने इसे गहराई से महसूस किया और गरीब व उपेक्षित वर्ग के बच्चों में शिक्षा मुहैया कराने में जुट गया। ये है 68 साल के भास्कर दत्त चौधरी, जो बंगाल में वर्षों से शिक्षा का अधिकार कानून के तहत आर्थिक रूप से पिछड़े, अनुसूचित जाति-जनजाति के बच्चों को अच्छे स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा मुहैया कराने में लगे हुए है।

भास्कर दत्त ने 35 वर्ष पहले खजुरदाहो विवेकानंद ग्रामीण संस्थान का गठन किया। उस समय वे गरीब ग्रामीण बच्चों को खुद पढ़ाते थे। उनके लिए पाठ्य सामग्रियों की भी व्यवस्था करते थे। उनके पढ़ाए कई छात्र आज सरकारी व निजी संस्थानों में कार्यरत हैं। अपनी कई छात्राओं की भाादी के लिए उन्होंने चंदा एकत्र कर आर्थिक मदद भी की। देश में शिक्षा का अधिकार कानून के लागू होने के बाद भास्कर दत्त नौकरानी, रिक्शा चालक वाले, राजमिस्त्री के बच्चों को शिक्षित करने में लग गए। हुगली जिले के बंडेल इलाके के रहने वाले भास्कर कहते हैं, शिक्षा के अधिकार कानून के तहत गरीब बच्चों को निःशुल्क अच्छे स्कूलों में पढ़ने

का अधिकार है। काफी पढ़े-लिखे लोगों को भी इस कानून की जानकारी नहीं है तो फिर दो जून की रोटी कमाने वालों को कहां से होगी? इन वर्गों के बच्चों को दाखिला लेने व निःशुल्क पढ़ाने से इन्कार करने वाले स्कूलों के खिलाफ राज्य व केन्द्र सरकार कारवाई कर सकती है। उन स्कूलों को काली सूची में डाला जा सकता है।

भास्कर दत्त ने बताया, पहले वे जिस स्कूल में गरीब बच्चे को लेकर गए थे, वहां से उन्हें लौटा दिया था, लेकिन जिलाधिकारी से मिलकर बात करने के बाद उनका दाखिला हो गया। भास्कर दत्त अब तक शिक्षा का अधिकार कानून के तहत 50 से अधिक बेहद गरीब बच्चों का अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में दाखिला करा चुके हैं।

भास्कर कहते हैं, अक्सर बड़े स्कूल इस कानून को मानने से इन्कार करते हुए गरीब के बच्चों को अन्य स्कूलों में ले जाने की सलाह देते हैं जबकि उन स्कूलों को खुद ही अति पिछड़े, अनुसूचित जाति-जनजाति के बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से निःशुल्क दाखिला लेने के लिए निर्देशिका जारी करनी चाहिए। इसे लेकर भी हम जागरूकता फैला रहे हैं। वह कहते हैं, कानून तो बन गया है लेकिन जागरूकता काफी कम है। मैं केन्द्र व राज्य सरकारों को पत्र लिखकर पूरे देश के निजी स्कूलों में शिक्षा का अधिकार के तहत 25 प्रतिशत निःशुल्क दाखिला आरक्षित करने की अपील करता हूं ताकि देश भर के गरीब बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल किया जा सके। इसे लेकर जनहित याचिका दायर करने की भी तैयारी है।

भास्कर दत्त चौधरी
ओम प्रकाश सिंह



जय श्री रामाय नमः सीता की अग्नि परीक्षा

सीता जी अग्नि-देव की उपासक थीं। पद्म-पुराण के अनुसार बनवास काल के कुछ अंतिम वर्षों में प्रभु श्री राम ने सीता जी से कहा कि दुष्ट राक्षसों का नाश करने हेतु अब हमारा लीला करने का समय आ गया है। अतः आप छद्म रूप में आ जाये। सीता जी ने अग्नि देव का अहमवाहन किया और उनके संरक्षण में जाने की बात कही। अग्नि देव ने सीता के वास्तविक स्वरूप को अपने संरक्षण में लिया और उनकी माया स्वरूप परछाई

को, सीता के रूप में राम के साथ भेज दिया। रावण ने सीता के इसी मायावी स्वरूप का हरण किया था। रावण विजय के बाद श्री राम ने माया स्वरूपी सीता को अपने वास्तविक सीता को श्री राम के पास वापस भेज दिया वास्तव में सीता जी की कोई अग्नि-परीक्षा नहीं हुयी थी वरन वह कुछ समय के लिये अग्नि देव को ही विदित थी। पूरे जीवन में राम और सीता ने इस बात को कभी भी जन-साधारण के समक्ष उजाकर नहीं किया।



राम मंदिर

संस्कृति के पावन विहान के लिए,
हिन्दू चेतना के अभियान के लिए,
धर्म के अनूठे अनुष्ठान के लिए,
सारे अवरोधों को हटा के रहेंगे,
हम राम मंदिर बना के रहेंगे।
राम दीन-दलितों के भगवान है,
एक नहीं इसके लाखों प्रमाण है,
राम केवट के, धोबियों के,
शबरियों के प्राण है,
ऐसे राम का जो भक्त नहीं है,
कोई और है वो हिन्दू रक्त नहीं है,
जांच हम इसकी करा के रहेंगे,
हम राम मंदिर बना के रहेंगे।

साध्वी ऋतम्भरा



देश सेवा का व्रत लें

डा केवलकृष्ण पाठक

जीवन को नियमित बना कर नवयुग का निर्माण करें
हृदय से सब की सेवा कर देश सेवा का ही व्रत लें
जियें स्वयं भी प्रसन्ता से और सभी को जीने दें
करें बुरा ना कभी किसी का बुरा करे जो तो दंड दें
जाती पाती और शहरी गांव का भेद सदा से मिट जाये
रिश्वतखोरी और चोर बाजारी का सब मिलकर अंत करें

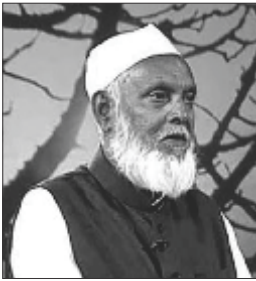
संपादक

रवींद्र ज्योति मासिक

जो देकर भी कुछ न मागें, वही सच्चा प्यार है।
भवरें और तितलिया फूलों के पराग का रस चुसती है।
मधुमक्खिया फूलों के पराग से मिठास बटोर बटोर कर मधु पैदा करती
है। कुछ पाने की आशा के बगैर देना ही सेवा है, त्याग है।
यही फूल के जीवन का संदेश है।



“मोदी सरकार ने मेरी सेवा की कद्र की”



लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार करके फैजाबाद और आसपास के इलाके में शरीफ चचा के नाम से चर्चित मोहम्मद भारीफ पद्मश्री दिए जाने की घोशणा से गदगद है। वह कहते हैं कि मोदी सरकार ने मेरी सेवाओं की कद्र करके मुझे यह सम्मान दिया है। खिड़की अली बेग मोहल्ले में रहने वाले मोहम्मद भारीफ सरकार को दुआएं देते हुए कहते हैं—यह सरकार सत्ता में बनी रहे और जैसी जनहित की योजनाए चला रही है, उसमें और बढ़ोतरी करे।



मोहम्मद भारीफ ने कहा कि जबतक मेरे भीतर जान है तबतक मैं यह काम करता ही रहूंगा। यह मुझे सुकून देता है। बीते 27 साल से इस सेवा में जुटे मोहम्मद भारीफ कहते हैं कि पहले की सरकारों ने मेरी कोर्ती को कोई तवज्जो नहीं दी। मोहम्मद भारीफ के बड़े बेटे, मो.सगीर कहते हैं कि इस मानवीय काम को वे खुद और उनका परिवार आगे बढ़ाएगा। यह कभी रुकेगा नहीं। पें से साइकल मैकेनिक भारीफ चचा अब तक तीन हजार हिंदुओं समेत 25000 लावारिसा लाशों का अंतिम संस्कार करवा चुके हैं। वह कहते हैं, मैं यह नेक काम लोगों की मदद से कर सका। सभी बधाई के पात्र है।



मणिमाला

आध्यात्मिक ग्रन्थों के अनुशील से मणिमाला सुन्दर लगी
स्वास्थ्य के लिए निम्नवत् प्रस्तुत है :-

- उपदेश :- अपने उपदेशों का स्वयं पालन करना एक दैवी गुण है।
 कर्म :- मनुष्य के कर्म उसके विचारों के सर्वोत्तम परिचायक होते हैं।
 चरित्र :- जो कुछ हमने चरित्र के अंदर संचित किया है वही साथ लेकर जाएंगे।
 जीवन :- जीवन विचार, अनुभव और श्रद्धा का घनफल है।
 पुरुशार्थ :- सत्विचार तब तक स्वप्नवत् है जब तक हम कर्म न करें।
 पुस्तक :- पुस्तक प्रेमी सबसे अधिक धनी और सुखी है।
 भक्ति :- स्वयं अंतरात्मा के सत्य की अथक खोज ही भक्ति है।
 भय :- ईश्वर का भय ही ज्ञान उदय है।
 मन :- अन्वेशणशील मन संसार की सबसे मुल्यावान वस्तु है।
 मौन :- मौन और एकान्त आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं।
 विचार :- स्वाध्याय, शांत विचार, मानव कृत्यों के सर्वाधिक भाक्ति गाली दूत है।
 सुख :- यह सर्वत्र विद्यमान है उसका श्रोत हमारे हृदयों में है।
 शत्रु :- तरह-तरह के कुविचार हमारी भांति, सुख और विजय के घोर भात्रु हैं।
 हृदय :- हृदय की कोई भाशा नहीं, हृदय से बातचित करता है।
 प्रेम :- प्रेम नित्य और अविनाशी तत्व है, मन की अपरिमित भाक्ति को उन्मुक्त करने का ठोस उपाय प्रेम ही है। प्रेम का फल आनंद है, वासना का शोक है भौतिक स्थूल रूप ही आसक्ति वासना है, वही भाप है तप द्वारा उसकी शुद्धि होती है।

रमेश चन्द्र पाण्डेय

स्वास्ति डी-85, कुर्माचल नगर लखनऊ-226016

“भारत माता सबसे प्यारी सबसे ऊँची तेरी शान,
 गणतंत्र दिवस पर शीष झुका कर हम करते हैं तुझे प्रणाम”
 भारत माता का हर क्षण मैं सम्मान करता हूँ,
 लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन है।
 अपने देश की मिट्टी का मैं गुणगान करता हूँ।
 है चाहत मुझमें वतन के लिए मर -मिटने की,
 तिरंगा हो कफन मेरा, बस यही अरमान रखता हूँ।



एच1एन1 इनफ्लूएंजा स्वाइन फ्लू से बचें

एच1 एन1 इनफ्लूएंजा (स्वाइन फ्लू) एक संक्रामक रोग है। प्रारम्भिक अवस्था में जाँच तथा उपचार से इस रोग के गंभीर परिणामों को रोका जा सकता है।

रोग फैलने के कारण



संक्रामित व्यक्ति के सम्पर्क से



खांसी एवं छींक के साथ निकले संक्रामक कणों द्वारा साँस के माध्यम से



हाथों तथा वस्तुओं पर उपस्थित संक्रामक कणों के संपर्क में आने से

रोग के लक्षण



बुखार



खाँसी



गले में दर्द



शरीर में दर्द



साँस लेने में कठिनाई

बचाव एवं रोकथाम के उपाय



नाक और मुँह को ढक कर रखें।



साबुन से अपने हाथों को नियमित रूप से धोएं।



पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ का सेवन करें।



रोग से संक्रामित मरीजों को स्वस्थ व्यक्तियों से अलग रखें।



आँख, नाक तथा मुँह को छूने से बचें।



चिकित्सक की सलाह के बिना औषधि का सेवन न करें।



रूमाल या टिशू पेपर का पुनः प्रयोग न करें।



भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचें।



हाथ मिलाने से बचें।

एच1 एन1 इनफ्लूएंजा (स्वाइन फ्लू) का उपचार सभी जिला चिकित्सालयों में निःशुल्क उपलब्ध है।

<https://www.facebook.com/NationalHealthMission.UP> https://twitter.com/nhm_up www.upnhmiecbcc.in

चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश - टोल फ्री नं०- 1800-180-5145
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश - टोल फ्री नं०- 1800-180-1900



राज्य कर (वाणिज्य कर) विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित

व्यापारी सम्पर्क अभियान

मा. मुख्यमंत्री जी की प्रेरणा से राज्य के जी.एस.टी. पंजीयन बेस में वृद्धि तथा राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश के व्यापारी जन के लिए संचालित योजनाओं से अवगत कराने हेतु राज्य कर (वाणिज्य कर) विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा दिनांक 31 दिसम्बर, 2019 तक व्यापारी सम्पर्क अभियान संचालित किया जायेगा।

1 अभियान के दौरान राज्य कर (वाणिज्य कर) विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रदेश के प्रत्येक जनपद के प्रत्येक बाजार में व्यापारी बन्धुओं से व्यक्तिगत सम्पर्क कर उन्हें जी०एस०टी० कर प्रणाली की विशेषताओं एवं राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार द्वारा व्यापारी बन्धुओं को प्रदान की जा रही सहुलियतों से अवगत कराते हुए अपंजीकृत व्यापारियों को जी०एस०टी० पंजीयन प्राप्त कर प्रदेश एवं देश की उन्नति में भागीदारी हेतु प्रेरित किया जायेगा।

2 सम्पर्क अभियान के दौरान विभाग द्वारा प्रदेश में पंजीकृत एवं अपंजीकृत व्यापारियों से सम्बन्धित सामान्य जानकारीयें इकट्ठा की जायेंगी।

3 सम्पर्क अभियान के दौरान प्रदेश के सभी जनपदों में पंजीयन जागरूकता गोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा।

4 सम्पर्क अभियान के दौरान विभाग द्वारा प्रदेश के व्यापारियों को जी०एस०टी० रिटर्न दाखिला एवं कम्पोजीशन स्कीम के संबंध में अवगत कराया जाएगा।

5 विभाग द्वारा मीके पर पंजीयन एवं रिटर्न दाखिला की प्रक्रिया के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा तथा व्यापारियों की तकनीकी समस्याओं का निदान किया जाएगा।

GST पंजीयन से लाभ

- जी.एस.टी. पंजीयन व्यापारी सम्मान का प्रतीक।
- देश एवं प्रदेश की विकास योजनाओं में जी.एस.टी. के अन्तर्गत पंजीकृत व्यक्तियों की सक्रिय भागीदारी।
- जी.एस.टी. पंजीयन व्यापारिक उन्नति की संभावनाओं का प्रथम स्तोपान।
- जी.एस.टी. कर प्रणाली में समस्त कार्य घर बैठे ऑनलाइन।
- जी.एस.टी. से सम्बंधित किसी भी कार्य हेतु सरकारी कार्यालय आने की आवश्यकता नहीं।
- देश के किसी भी राज्य से खरीदे गये माल पर आई.टी.सी. की निर्बाध सुविधा।
- रु. 1.5 करोड़ वार्षिक कारोबार सीमा तक के छोटे एवं मझोले व्यापारियों के लिये समाधान योजना।
- उ.प्र. राज्य में पंजीकृत व्यापारियों के लिये रु. 10 लाख की व्यापारी दुर्घटना बीमा योजना।
- बीमा योजना के लिये कोई प्रीमियम नहीं।
- छोटे एवं मझोले व्यापारियों के लिये अत्यंत सरल रिटर्न फार्म सहज एवं सुगम।
- शून्य खरीद-बिज़ी से सम्बंधित रिटर्न SMS के माध्यम से दाखिल करने की सुविधा।
- रु. 5 करोड़ तक की वार्षिक कारोबार सीमा तक के व्यापारियों के लिये त्रिमाही रिटर्न।
- केन्द्र सरकार द्वारा संचालित पेशान योजना का लाभ।

पंजीयन हेतु
आवश्यक
पत्र

- पैन नंबर, मोबाईल नंबर, ई-मेल का पता, आधार अथवा डिजिटल सिग्नेचर।
- पहचान प्रमाण पत्र।
- आवास एवं व्यापार स्थल के पते का प्रमाण।
- बैंक खाते का प्रमाण।



राज्य कर (वाणिज्य कर) विभाग, उत्तर प्रदेश

वेबसाइट | ई-मेल | टोल-फ्री
www.comtax.up.nic.in | cthelpline@up.nic.in | @comtaxupgst | @ComtaxU
हेल्पलाइन | कंट्रोल रूम | टोल-फ्री
0522-3312600, 2721944 | 0522-2721153 | 18001805223